केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल
16					

परी... अनुमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ➔

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
श्रीमती शशि कला मेनोरिया मा. शि. शा. न. ल. क. उ. मा. वि. मन्दसौर (म.प्र.) मो.-9630488895	कमलेश शर्मा अध्यापक शास. हाईस्कूल बिलांत्री मो. 9691928196

पृष्ठ 2 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 1

प्रश्न क्रमांक 01

सही विकल्प

(i) सुमित्रानंदन 'पंत' (ब)

(ii) दो फुट ऊँची (अ)

(iii) रामवृक्ष बेनीपुरी (अ)

(iv) सूरदास (अ)

(v) सन् 1899 (स)

(vi) कोहरा (ब)

B
S
E

निरन्तर ....

(3)

कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र. 2

प्रश्न क्रमांक - 02

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(i) 8 1

(ii) 2 1

(iii) सूरदास 1

(iv) 13-13 1

(v) 4 1

(vi) 1900 1

BSE

क्र. पृ. उ.

2

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 3

प्रश्न क्रमांक -03

सही जोडी

(क)		ख
(i)	चौपाई	16
(ii)	एक अंक	एकांकी
(iii)	शिवपूजन सहाय	~~मुजफ्फरपुर~~ माता का आँचल
(iv)	रामवृक्ष बेनीपुरी	मुजफ्फरपुर
(v)	मैथिलीशरण गुप्त	पंचवटी
(vi)	रिसाई	क्रोध करना।

B
S
E

निरन्तर ....

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.4

प्रश्न क्रमांक -04.

एक वाक्य में उत्तर

3(i) → कवि नागार्जुन का मूल नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' था।

3(ii) → निराला रचनावली में 'आठ' खंड है।

3(iii) → रामचरितमानस का मुख्य छंद 'चौपाई' है।

3(iv) → विनय पत्रिका की रचना 'ब्रजभाषा' में हुई।

3(v) → कामायनी 'जयशंकर प्रसाद' की रचना है।

3(vi) → 'अट नहीं रही' कविता फाल्गुन की मादकता तथा फागुन माह में प्रकृति की सुंदरता को प्रकट करती है।

क्र.पृ.उ.

पिछले पृष्ठ	पृष्ठ के अंक	कुल अंक
24	6	30

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र.
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 05

प्रश्न क्रमांक 05

सत्य / असत्य

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

(vi) असत्य

BSE

क्र. पृ. उ.

प्रश्न क्र. 6

प्रश्न क्रमांक -06

उत्तर क्रमांक -06 → भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले छोड़कर इसलिए नहीं जाना चाहती थीं क्योंकि भगत के एकमात्र पुत्र की मृत्यु हो चुकी थी, तथा उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। नियम-धर्म के अनुसार जीवन यापन करने वाले भगत को स्वयं की चिन्ता नहीं रहती थी। वधू उनके खाने-पीने भोजन आदि का प्रबंध करने के लिए ~~नहीं~~ उन्हें अकेले नहीं छोड़ना चाहती थी। वह उनकी देखभाल करना चाहती थीं।

प्रश्न क्रमांक -07.

उत्तर क्रमांक -07

कृ. पृ. उ.

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र. 7

प्रश्न क्रमांक 07

उत्तर क्रमांक 07 → लेखिका मन्नू भंडारी के जीवन पर दो व्यक्तियों का प्रमुख रूप से प्रभाव रहा। लेखिका के पिताजी का तो उनपर पर्याप्त प्रभाव रहा। वे गोरे रंग को महत्व देते थे किन्तु लेखिका का रंग काला था। वे लेखिका की उनकी बड़ी बहन सुशीला से तुलना करते थे, जो गोरी तथा सुन्दर थी। पिताजी की शह (छूट) से ही लेखिका में घर आने जाने वालों से विचार विमर्श कर सकने तथा देश की जानकारी प्राप्त करने का मौका मिला।

दूसरा → हिन्दी की प्राध्यापिका शिला अग्रवाल ने लेखिका की हिन्दी साहित्य के प्रति अभिरुची जाग्रत की तथा उनकी सोच को विस्तार दिया।

इन्हीं के कारण लेखिका स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय हुई।

BSE

निरन्तर....

पृष्ठ के अंक कुल अंक

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 8

प्रश्न क्रमांक - 08

गद्य की विधाएँ

उत्तर क्रमांक - 08.

गद्य की चार विधाएँ निम्नलिखित हैं —

(1) कहानी
(2) उपन्यास
(3) निबंध
(4) नाटक

B
S
E

कृ॰पृ॰उ॰

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 9

प्रश्न क्रमांक - 09 'अथवा'

उत्तर क्रमांक -09 → 'शब्द और अर्थ' को संबंध को शब्द शक्ति कहा है। शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति 'शब्द शक्ति' कहलाती है।

शब्द शक्ति 'तीन' प्रकार की होती है।

(1) अभिधा शब्द शक्ति
(2) लक्षणा शब्द शक्ति
(3) व्यंजना शब्द शक्ति।

B
S
E

निरन्तर ....

(11)

37½ + 2 = 39½

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 11 के अंक   कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 10

प्रश्न क्रमांक - 10 'अथवा'

उत्तर क्रमांक - 10 → खेलने में बच्चे की स्वाभाविक रुचि होती है। जब उसे अपनी उम्र के बच्चे खेलते हुए दिख जाए तो वह सब कुछ भूलकर खेलने में रम जाता है। यही कारण है जो भोलेनाथ अपने पिता की गोद में सिसक रहा था, जब अपने साथियों को खेलता देखता है तो उसका मन लालायित हो उठता है और वह सिसकना भूलकर खेलने चला जाता है। अर्थात् वह सिसकना भूल जाता है।

क्र. प्र. उ.

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. ||

प्रश्न क्रमांक - 11 नई कविता की विशेषताएँ

उत्तर क्रमांक - 11

नई कविता की दो विशेषताएं निम्नलिखित है -

(1) नये - नये बिंबो की खोज की गई।

(2) लघुमानववाद तथा क्षणवाद को महत्व दिया गया।

(3) क्षणवाद को महत्व अर्थात् जीवन का प्रत्येक क्षण आवश्यक है।

"भवानी प्रसाद मिश्र" नई कविता के कवि हैं।

BSE

निरन्तर ....

प्रश्न क्र.12

B
S
E

प्रश्न क्रमांक -12 "सूरदास का जीवन परिचय"

उत्तर क्रमांक -12 →

• दो रचनाएँ → सूरसागर, सूर-सारावली।

• भावपक्ष → कृष्ण लीलाओं के अमर गायक सूरदास के काव्य में 'भक्ति, वात्सल्य तथा श्रृंगार' की त्रिवेणी प्रवाहित है। विनय, माधुर्य एवं सख्य भाव की भक्ति का मिश्रण सूर के काव्य की विशेषता है। कृष्ण के प्रेम में लीन गोपियों की संयोग काल की उन्मत्ता तथा वियोग काल की मार्मिक वेदना सूर के काव्य में साकार हो उठी है।

सूरदास भक्तिकाल की कृष्ण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि है। 'वात्सल्य और श्रृंगार' प्रमुख रस है। अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

सूरदास को 'वात्सल्य सम्राट' तथा 'साहित्याकाश का सूर्य' भी कहा जाता है।

पृष्ठ 14 के अंक कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र. 13

प्रश्न क्रमांक - 13 'फसल'

उत्तर क्रमांक - 13

कवि नागार्जुन के अनुसार फसल नदियों के पानी का जादू है, किसानों के हाथों की महिमा है, तथा भूरी काली, संदली मिट्टी का गुणधर्म है। फसल सूर्य की किरणों का रूपांतर है तथा हवा के थिरकन का सिमटा हुआ संकोच है।

निरन्तर ...

पृष्ठ 15 के अंक कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र. 14

प्रश्न क्रमांक -14

उत्तर क्रमांक -14 → स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का आशय →
कवि जयशंकर प्रसाद के जीवन में कुछ स्मृतियां ऐसी रही जो उनकी संम संपत्ति रही, जो उन्हें ऊर्जा, जीवन्तता प्रदान करती रही। यह स्मृतियाँ उनकी नी निजी रही, जो उन्होंने अपनी प्रिय के साथ मधुर रात्रियां व्यतीत की, जो उन्होंने खिलखिलाकर वार्तालाप किया, वे उन्हें अभी भी याद हैं। यही स्मृतियां उनके भावी, आने वाले जीवन की पाथेय संबल है। वे इन स्मृतियों को उजागर नहीं करना चाहते।

क्र.पृ.उ

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 15

प्रश्न क्रमांक -15 काव्य की परिभाषा

उत्तर क्रमांक -15

आचार्य ~~विश्वव~~ विश्वनाथ के अनुसार →
'रसात्मकं वाक्यं काव्यं' अर्थात् रस युक्त वाक्य ही काव्य है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार→
"जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उसे प्रस्तुत तथ्य या वस्तु की मार्मिक भावना में लीन करदे उसे 'काव्य' कहते है।"

B
S
E

निरन्तर ....

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.16

प्रश्न क्रमांक -16 रस

उत्तर क्रमांक -16. रस → रस का शाब्दिक अर्थ होता है 'आनंद'। जब किसी काव्य को पढ़ते, सुनते या देखते समय, पाठक, श्रोता या दर्शक को आनंद की अनुभूति प्राप्त हो उसे 'रस' कहा जाता है। रस को 'काव्य की आत्मा' कहा जाता है।

'आचार्य ~~भरतक्ष~~ भरतमुनि के अनुसार' →

"विभावानुभावव्यभिचारी संयोगाद्रस निष्पत्तिः'।"

"अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा संचारी (व्यभिचारी) भावों के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।" रस 'दस' प्रकार के होते हैं।

क्र.प्र.उ.

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 17

प्रश्न क्रमांक 17.

रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन परिचय

उत्तर क्रमांक - 17 →

• दो रचनाएँ → माटी की मूरतें , जंजीरे और दिवारें।

• भाषा शैली → बेनीपुरी जी की भाषा शैली की विशेष पहचान है। आपकी भाषा सरल , साहित्यिक है। आपकी रचनाओं में तत्सम , तद्भव शब्दों के साथ आपने आवश्यकता के अनुसार देशज तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग भी किया है। आपकी भाषा में क्रियाओं का अभाव है तथा वाक्य छोटे - छोटे है। मुहावरे तथा लोकोक्ति के प्रयोग से भाषा में चमत्कार आ गया है। विशिष्ट रचनाकार होने के कारण आपको 'कलम का जादूगर' की उपाधि प्राप्त है।

आपने व्यंग्यात्मक , विचारात्मक , वर्णनात्मक , विवरणात्मक भावात्मक आदि ~~शैलियों~~ शैलीयों को अपनाया है। आपने गद्य की अनेक विधाओं में रचनाए की है।

निरन्तर...

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 18

प्रश्न क्रमांक - 18 | गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 'अथवा'

उत्तर क्रमांक - 18

• संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज -2' के 'बालगोबिन भगत' पाठ से अवतरित है। इसके ~~कवि~~ लेखक 'रामवृक्ष बेनीपुरी' है।

• प्रसंग :- इस ~~पद्यांश~~ गद्यांश में आषाढ़ माह में रिमझिम बरसात के चलते वातावरण तथा किसानों के हाव भाव तथा मनोरम वातावरण के बारे में बताया है।

• व्याख्या :- इस गद्यांश में बताया गया है कि आषाढ़ में रिमझिम ~~ब~~ बरसात हो रही है। इस समय सारा गाँव खेतों में है, कहीं रोपनी हो रही है तो कहीं हल चल रहे हैं। बारिश के कारण धान के खेतों में पानी भर गया है, बच्चे झूम उठे हैं, व पानी में ~~उछ~~ उछल रहें है। औरतें भोजन लेकर मेंड़ो पर बैठी है तथा इतना मनोरम वातावरण है। धूप बिल्कुल नहीं निकल रहीं है। आकाश बादलों से घिरा है तथा ठंड़ी ठंडी पुरवाई, हवा चल रही हैं, और इसी समय बालगोबिन ~~भर~~ भगत मस्त खँजड़ी बजा रहे है तथा कबीर के पदों को गा रहे हैं। सभी उनके मधुर स्वर को

क्र. पृ. उ.

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

सुनकर आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। बालगोबिन भगत का स्वर अत्यंत मधुर है। जो स्वर तरंग कानों मे झंकार सी उठी है यह बालगोबिन भगत का स्वर है।

विशेष :-
1) आषाढ़ के माह में रिमझिम बरसात हो रही हैं।
2) ठंडी पुरवाई चल रही है।
3) बालगोबिन भगत के स्वर की झंकार तरंग उठ रही है।
4) वातावरण मनोरम है।

निरन्तर ...

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 21 के अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.19

प्रश्न क्रमांक -19   "अनुशासन का महत्व"

उत्तर क्रमांक -19

"अनुशासन का महत्व" सम्पूर्ण जीवन तथा हर एक कार्य के लिए होता है। अनुशासन का सामान्य अर्थ है "नियम पालन"। जीवन में यदि नियमों का पालन हो तो जीवन सुगम हो जाता है। अनुशासित रहते हुए मनुष्य उन्नति पथ पर अग्रसर होता है। छात्र जीवन में अनुशासन का सर्वाधिक महत्व होता है, क्योंकि छात्र जीवन ही आगामी जीवन की आधारशिला होता है। छात्रों का अनुशासन पालन विद्यालय से ही शुरू आरंभ हो जाता है। यदि मानव बचपन से ही अनुशासन पालन करें तो आगामी जीवन अपने आप ही सरस हो जाता है। वास्तव में अनुशासित व्यक्ति सभी को प्रिय भी होता है। अनुशासन का पालन करते करते वह इतनी ऊँचाई पर पहुँच जाता है, अच्छे पद पर प्रतिष्ठित होता है। अनुशासन पालन करना आवश्यक है। हर मनुष्य को अनुशासन पालन आभ्यंन्तर रूप से करना चाहिए नाकि बाहरी। बाहरी तो केवल दिखावे से ही उत्पन्न होता है या फिर बाहरी दबाव से। परंतु सभी को अनुशासित रहना चाहिए।

कृ. पृ. उ.

B
S
E

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.२०

प्रश्न क्रमांक - २०.

पद्यांश सप्रसंग व्याख्या

उत्तर क्रमांक - २०.

• संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज-२' के 'अट नहीं रहीं है' कविता से अवतरित हैं, इसके कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' हैं।

• प्रसंग :- इस पद्यांश में कवि फागुन मास में प्रकृति की सुंदरता को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि प्रकृति में फागुन की सुंदरता समा नहीं रहीं है।

• व्याख्या :- कवि 'निराला' फागुन मास में प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करते हुए कहते है कि समा नहीं रहीं है, अर्थात फागुन की सुंदरता प्रकृति में समा नहीं रही है। वे फागुन की सुंदरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि फागुन में हर जगह सुगंध ही फैली होती है, वे इसको कहते है कि फागुन जहाँ कहीं भी साँस लेता है, वहाँ सुगंध फैल जाती है, ऐसा मन करता है कि यदि कवि के पंख लग जाए तो वे आकाश में उड़ने लगे। कवि कहते है कि फागुन ~~की~~ में प्रकृति

निरन्तर ....

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

की सुंदरता अपने चरम पर है, अर्थात् कवि की उस प्रकृति की सुंदरता से आँख हट नहीं पा रही है। सभी ओर सुगंध फैली है।

• काव्य सौन्दर्य :- (1) फागुन की सुंदरता प्रकृति में समा नहीं रही है।

(2) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग है।

(3) छायावादी शैली का प्रयोग किया है।

(4) सरल, सुबोध भाषा में रचना की गई है।

कृ. पृ. उ.

Laser, Inkjet & Copier Label ST-16 A4 99.1mm x 33.9mm x 16

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 24 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 21

प्रश्न क्रमांक - 21.

'अथवा'

उत्तर क्रमांक - 21

"पत्र लेखन"

105 गाँधीनगर कॉलोनी
शिवपुरी,

दिनांक - 05-02-24,

प्रिय मित्र प्रियांशी,

आशा है कि तुम वहाँ कुशल मंगल होगी। मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है, कि मेरे बड़े भाई धनंजय सिंह का शुभ विवाह दिनांक 26 फरवरी को निश्चित हुआ है। तुम्हें तो पता ही है, कि तुम्हारा आगमन मेरे लिए कितना शुभ होगा। तुम विवाह प्रारम्भ होने के कुछ समय पहले ही आ जाना, साथ में तैयारी करेंगे। तुम्हारे माता-पिता को भी साथ लाना। कार्ड छपते ही भेज दूंगी। परन्तु तुम्हे अवश्य ही आना होगा। तुम्हारे माता-पिता को प्रणाम।

प्रतिक्षारथ।

तुम्हारी प्रिय सखी
ईश्मिता।

B S E

निरन्तर.....

SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.22

प्रश्न क्रमांक - 22

निबंध लेखन

उत्तर क्रमांक - 22.

विज्ञान के बढ़ते चरण

रूपरेखा - (i) प्रस्तावना।
(ii) कम्प्यूटर विज्ञान का आविष्कार
(iii) यातायात के क्षेत्र में
(iv) कृषि के क्षेत्र में
(v) चिकित्सा के क्षेत्र में
(vi) विज्ञान से हानि
(vii) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना - आज का युग विज्ञान का युग हैं। विज्ञान ने सभी कार्यों को आसान बनाकर हमारे समय को भी बचाया है। विज्ञान का बढ़ना ही उन्नति का प्रमुख कारण है। आज हर देश में अत्यधिक कार्य विज्ञान के बने उपकरणों से होने लगे हैं। विज्ञान ने हमें अनेक प्रकार के यंत्र, तंत्र, उपकरण आदि प्रदान किए। हमारे लिए विज्ञान की देन बहुत है, परंतु विज्ञान भी मानव द्वारा ही निर्मित है। मानव के द्वारा ही विज्ञान उन्नति कर रहा है।

BSE

क्र.पृ.3.

मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(2) कम्प्यूटर विज्ञान का आविष्कार :- कम्प्यूटर को विज्ञान का एक महान आविष्कार तथा बड़ा आविष्कार माना जाता है कम्प्यूटर के अविष्कार के बाद हमे अनेक सहायता मिली। पहले कम्प्यूटर 1600 ई के अन्तराल में जापान में अबेकस तैयार किया गया जिसके द्वारा अनेक सवालों का हल किया जाने लगा। फिर कम्प्यूटर एक कमरें जितने बड़े होने लगें । फिर छोटे कम्प्यूटर के आविष्कार से अधिक लाभ हुए , यह चार्ल्स बेबेज द्वारा बनाया गया था।

B
S
E

(3) यातायात के क्षेत्र में : यातायात के क्षेत्र में आज अधिक उन्नति प्राप्त कर चुका है। पहले एक दू स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में बहुत समय लगता था, परन्तु अब यातायात के अनेक साधन होने से जैसे - बाईक, कार, बस, ट्रेन, ऐरोप्लेन, आदि है हम आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते है। पहले विदेश जाने का जो सपना होता था, वह अब साकार होने लगा है। कुछ घंटो में हम विदेश जा सकते है।

(4) कृषि के क्षेत्र में : कृषि के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अच्छी प्रगति कर ली है। सन् 1960 के लगभग 'हरी क्रान्ति' आने से उत्पादन में वृद्धि हुई। तथा सिंचाई के भी नए तरीके सामने आए है।

निरन्तर ....

प्रश्न क्र.

आज किसान साल में अनेक बार फसल ले सकता है। तथा सभी कार्य, कृषि सम्बंधित मशीनों से हो जाते हैं, उत्पादन भी बढ गया है।

(5) चिकित्सा के क्षेत्र में :- चिकित्सा के क्षेत्र में तो विज्ञान ने अनगिनत कार्य किए हैं, पहले जिस बिमारी का इलाज संभव नहीं था. जो लाईलाज थी, उनका ईलाज भी संभव है। आज हृदय संबंधी सभी रोगों का उपचार हो सकता है। तथा शरीर के अंग भी दान कर सकते हैं, हर समस्या का समाधान, विज्ञान ने किया है।

(6) विज्ञान से हानि :- जहाँ विज्ञान की इतनी देन है वहीं उसके दुष्प्रभाव भी सामने आए है। विज्ञान ने हमे अनेक हिंसक हथियार भी दिए। एक उदाहरण है हिरोशिमा नागासाकी जापान जहाँ अणु बम के विस्फोट के कारण अन्य लोग मरे थे। अभी तक वहाँ की स्थिति ठीक नहीं है। जो चिकित्सक बिमारियाँ उत्पन्न हुई है, देखा जाए तो उसका कारण भी विज्ञान ही है। अर्थात विज्ञान एक अभिशाप के रूप में भी सिद्ध हुआ है।

(7) उपसंहार :- हर चीज के दो पहलू होते है - वैसे ही विज्ञान के भी है। विज्ञान का दुरुपयोग भी हो रहा हैं। हमें सतर्क होकर विज्ञान का सदुपयोग करना चाहिए, दुरुपयोग नहीं। साथ ही मोबाईल का भी, यह भी विज्ञान की देन है. इसका भी दुरुपयोग हो रहा है। सदुपयोग करे।

कृ. पृ. उ.

प्रश्न क्र. 23

प्रश्न क्रमांक - 23. अपठित गद्यांश।

उत्तर क्रमांक - 23.

उ (i) → 'हिमालय पहाड़ की सुंदरता' तथा 'विशाल हिमालय'।

उ (ii) → हिमालय की सुन्दरता को देखकर मन आनंद से भर जाता है तथा कृतज्ञ हो जाता है, ऐसा लगता है मानो विशाल सृष्टि ईश्वर की देन है।

उ (iii) → गद्यांश का सारांश — इस गद्यांश में हिमालय की पवित्र बताई गई है, हिमालय प्राचीन काल है से है पवित्र माना जाता है। संदेह की कोई बात नहीं है कि हिमालय के पहाड़ों के दृश्य अत्यंत सुंदर है। पर्वतों की विशालता को देखकर मन आनंद और कृतज्ञ अर्थात् प्रकृति का उपकार मानने वाला हो जाता है। प्रकृति से उपकार मानकर, पहाड़ों को निहारता था। यह विशाल सृष्टि ईश्वर की ही ~~देश~~ देन है, सारी सृष्टि

निरन्तर.....

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

के प्रति समभाव जाग्रत हो जाता है। वस्तुतः यह बताया गया है कि यह दृष्टि कलात्मक नहीं है और ना हि आध्यात्मिक।

BSE